अतिप्राचीन प्राकृतिक जैन गुफाओं, शैल शायिकाओं एवं शैलोत्कीर्ण जैन प्रतिमाओं का हिन्दू मन्दिरों के रूप में रूपांतरण

❒ विजय कुमार जैन 'बाबाजी'

प्राचीनकाल में तमिलनाडु में जैनधर्म राजाओं के आश्रय से पनपता रहा चेर, चोल, पांड्य और पल्लव आदि नरेशों में कतिपय जैन धर्मावलम्बी थे और कुछ जैनधर्म को आश्रय देने वाले थे। इसका प्रमाण यहाँ के भग्नावशेष और बड़े-बड़े मंदिर हैं चारों दिशाओं के प्रवेशद्वार वाले जितने भी अजैनों के मंदिर हैं वे सभी एक समय में जैन मंदिर थे। वे सभी समवशरण पद्धति से बनाये हुए थे। अब भी बहुत से अजैन मंदिरों में जैनत्त्व के चिन्ह पाए जाते हैं। इस पवित्र भूमि में जगत प्रसिद्ध समन्तभद्र, पूज्यपाद, अकलंक, सिंहनंदी, जिनसेन, वीरसेन और मल्लिशेण आदि महान ऋषियों ने जन्म लिया था। यह पावन स्थान उन तपस्वियों के जन्म स्थान होने के साथ-साथ उनका कर्म क्षेत्र भी रहा। यहाँ ऐसा कोई पहाड़ नहीं जो जैन संतों के शिलालेखों, शय्याओं वस्तिकाओं आदि चिन्हों से रिक्त हो।

तमिलनाडु के प्राचीन क्षेत्रों में थिरुपरनकुंद्रम (Thirupa-rankundram jain Hills) ६२५००५ (९.८७८०६३, ७८. ०६७२५०) जैन पुरावशेषों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस क्षेत्र का सबसे पुराना और सबसे प्रसिद्ध जैन केंद्र है। मदुराई शहर का एक उपनगर है जो की मदराई नगर से करीव १० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह प्राचीन पहाड़ी जैनियों, हिंदुओं और मुसलमानों के लिए एक पवित्र स्थान है। यह मुरुगन कोविल, काशी विश्वनाथ और सुब्रमण्य स्वामी मंदिर के कारण भी प्रसिद्ध है। मदुराई के अंतिम मुस्लिम शासक सिकंदर शा की हार हुई और उसे उबलते तेल में फेंक कर मारा गया था। इसलिए, थिरुपरनकुंद्रम को 'सिकंदर मलाई' भी कहा जाता है। यह गुफा ठीक ११२ साल पहले १९१० से भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के नियंत्रण में है। तिरुप्परन कुंद्रम की प्राचीनता पूर्व-सामान्य युग की है। पूर्व और बाद के ईसाई युगों में इन गुफाओं पर निवास करने वाले जैन साधुओं के लिए रॉक-कट शायिकाओं की श्रृंखला के साथ प्राकृतिक गुफाएँ, लगभग पहाड़ी की मध्य ऊँचाई पर विशाल पहाड़ी के पश्चिमी छोर पर पाई जाती हैं। वहाँ उत्कीर्ण ब्राह्मी शिलालेख इस तथ्य की पुष्टि करता है। पहली शताब्दी ईसा पूर्व से पहली शताब्दी ईस्वी के चार तमिल ब्राह्मी शिलालेख पत्थर के बिस्तरों के सामने या सिर पर और पत्थर के बिस्तरों की पंक्ति के ऊपर स्थित लॉज पर खुदे हुए हैं। थिरुप्परन कुंद्रम का उल्लेख विभिन्न संगम साहित्यिक कृतियों में किया गया है, जैसे अकनानुरु (Akananuru), कलित्टोकाई, (Kalittokai), मतुराइक्कंसी (Maturaikkanci), परीपाटल (Paripatal) और तिरुमुरुकररुपताई (Tirumurukarrup-patai)। संगम साहित्य में इस स्थान को 'परनकुनरू' (Parankunru) कहा गया है। संगम कार्यों के अलावा, इस स्थान का उल्लेख थेवरम (Thevaram), कल्लटम (Kallatam), पेरियापुराणम (Periyapuranam), तिरुपुकल (Tiruppukal), कांतापुराणम (Kantapuranam) और कई अन्य बाद के कार्यों में भी किया गया है। इस स्थान पर लगभग दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से ५वीं शताब्दी ईस्वी तक जैन धर्म का उदय हुआ। प्राचीन तमिल देश के दक्षिणी क्षेत्र में कलाभारस (Kalabhras) को उखाड़ फेंककर, पहले प्रारंभिक पांड्य राजा कडुंगन ने ५५० ईस्वीं के आसपास मदुरै को अपनी पारंपरिक राजधानी के रूप में स्थापित किया। प्रारंभिक पांड्यों ने अपने समकालीनों जैसे कांची के पल्लवों और बादामी के प्रारंभिक पश्चिमी चालुक्यों के साथ प्रारंभिक मध्ययुगीन दक्षिण भारत के राजनीतिक परिदृश्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। ७वीं शताब्दी ईस्वी के मध्य में जैन धर्म का पतन शुरू हुआ और ८वीं शताब्दी ईस्वी के अंत में ब्राह्मणवादी/हिंदू रॉककट मंदिरों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। विशाल पहाड़ी के उत्तरी और दक्षिणी भाग पर २ गुफा मंदिर हैं। जो इस शहर का प्रमुख स्थलचिह है।

कई जैन और बाद के हिंदू रॉक-कट रिलीफ और मंदिर जो लगभग पहली शताब्दी ईसा पूर्व से १५वीं शताब्दी ईस्वीं के हैं, पूरे पहाड़ी पर पाए जाते हैं। थेन्टिरुप्परनकुंड्रम या थिरुपरनकुंड्रम (Thentirupparankundram or Thiruparankundram) रॉक-कट गुफा को 'उमाई अंदर' गुफा भी कहा जाता है, जो दक्षिणी ढलानों पर स्थित है। तिरुपरनकुद्रम पहाड़ी की इसमें नक्काशी की तीन परतें हैं। बाहरी दीवार पर कुछ जैन रिलीफ हैं, जो संभवतः पहली शताब्दी ईसा पूर्व और पाँचवीं शताब्दी ईस्वी के बीच खुदी हुई हैं। पहाड़ी के चारों ओर जैन रॉक बेड, तमिल ब्राह्मी और वट्टेलुट्टु (Vatteluttu) शिलालेख और जैन मूर्तियाँ यहाँ पाई गई हैं। यह स्थान प्रारंभ में जैन धर्म का केंद्र था। इस तथ्य को कई विद्वान इतिहासकारों ने सिद्ध किया है। ऐसा ही एक महत्त्वपूर्ण शिलालेख शायिका के तकिये वाले हिस्से में मिलता है। इस शिलालेख में एक श्रावक का उल्लेख मिलता है जो प्राचीन श्रीलंका में 'इरुकट्टर' (Irukattur) नामक स्थान का निवासी था। उन्होंने इस गुफा के लिए दान दिया था। जैन साधुओं (Siddhars) ने चिकित्सा सेवाओं का भी अभ्यास किया। जड़ी-बूटियों के पत्तों को पीसने का स्थान उसी का प्रमाण है। इन गुफाओं का उपयोग जैन ऋषियों द्वारा ध्यान और चतुर्मास के लिए किया गया था। यह गुफा वास्तव में प्रारंभिक पांड्य की अवधि के दौरान खोदी गई थी और जैन धर्म को समर्पित है। इसमें एक अर्धमंडप के साथ एक वर्गाकार गर्भगृह है। अर्धमंडप के प्रवेशद्वार पर दो स्तंभ और दो भित्ति स्तंभ हैं, जो कॉर्बल्स के साथ वर्गाकार शाफ्ट हैं। स्तंभों पर पुष्प पदक उकेरे गए हैं। तीर्थंकर की छवि गर्भगृह में मौजूद थी, जिसे बाद में तीर्थंकर की छवि को काटकर हटा दिया गया था और इसके स्थान पर, इस गुफा में अर्धनारीश्वर की एक छवि को तराशा गया था। आज भी गर्भगृह की

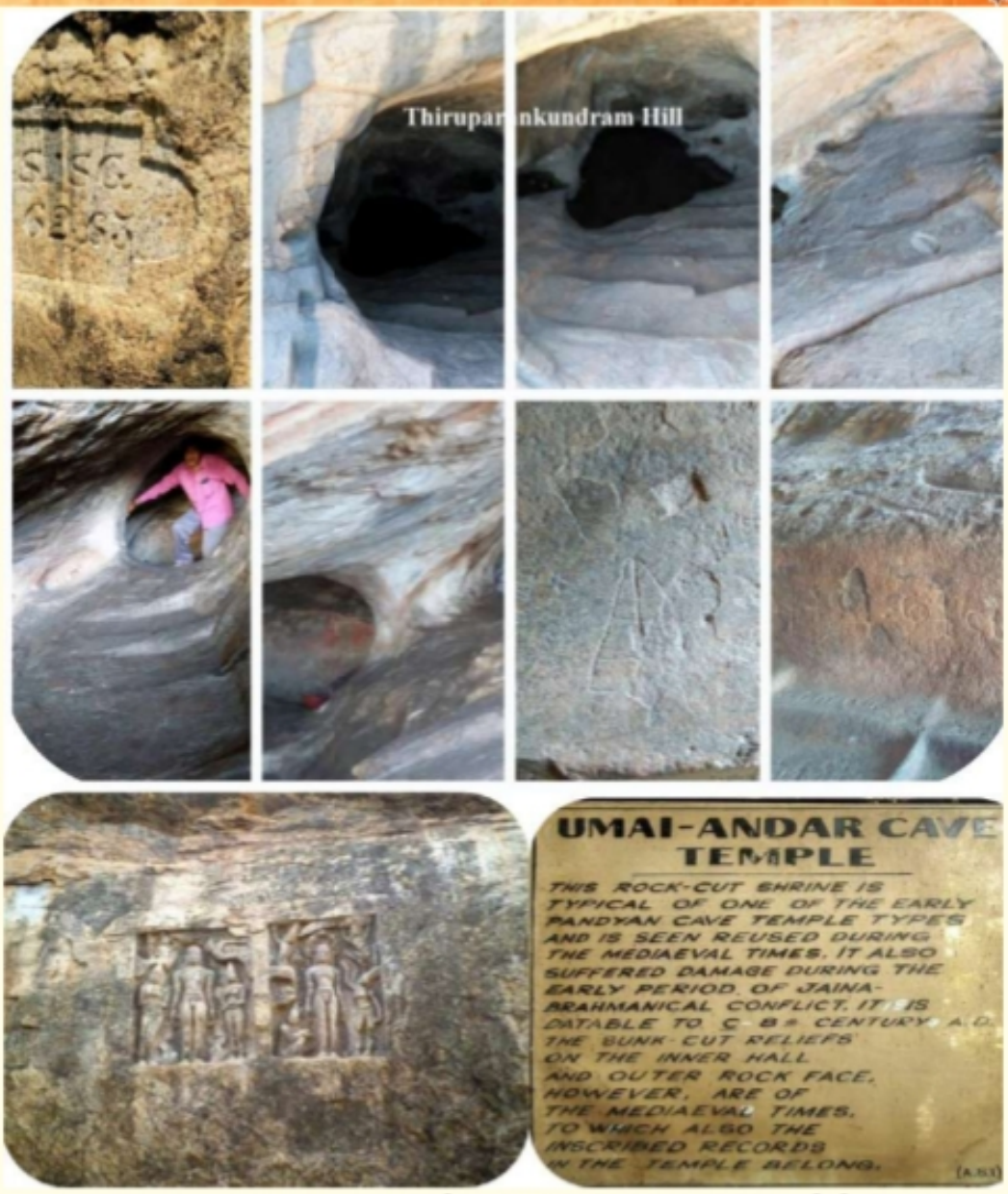

पिछली दीवार देखी जा सकती है जहाँ तीर्थंकर के पीछे लता के डिजाइन पाए जाते हैं। इस गुफा में प्रारंभिक पांड्यकाल का कोई अभिलेखीय साक्ष्य नहीं मिलता है, अगर यह वहाँ होता तो इसे नष्ट कर दिया जाता। क्षेत्र अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि रॉक-कट गुफा मूलरूप से अरीकेसरी मारवर्मन (Arikesari Maravarman) की अवधि के दौरान जैन धर्म को समर्पित थी, क्योंकि वह जैनधर्म के प्रबल अनुयायी थे। ऐसा प्रतीत होता है कि जैन धर्म से काटे गए शिला का हिंदू धर्म में परिवर्तन पांड्य काल के बाद हुआ था। रॉक कट के अग्रभाग पर- भैरव, गणेश, शैव संत जैसे अप्पर, सांबंदर, सुंदरार और मणिक्कवसागर (Appar, Sambandar, Sundarar and Manikkavasagar) और ऋषि को यह घोषणा करने के लिए तराशा गया है कि यह गुफा शैववाद को समर्पित है। हालाँकि, यह बाद के पांड्यकाल के दौरान जैन धर्म से शैववाद में रूपांतरण का मामला है। दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान यहाँ जैन धर्म का विकास हुआ। कुलोथुगा (Kulothunga) चोल III से मदुरै पर कब्जा करने वाले मारवरम सुंदर पांडियन (१२५६ ईस्वीं) के शिलालेख भी इस गुफा में पाए जाते हैं और शिलालेख उनकी प्रशंसा 'चोनाडु वजंगिया सुंदर पांडियन' (Chonaadu Vazhangiya Sundara Pandian) के रूप में करते हैं। दुःख की बात है कि १२५० ईस्वीं में उन्होंने इन जैन गुफाओं को हिंदू शैव मंदिरों में बदल दिया था। काशी विश्वनाथ मंदिर के रास्ते में, सरस्वती मंदिर के पास एक ऊँची, गोल चट्टान पर दो तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उकेरी गई हैं। यह मूर्ति धर्मेंद्र के साथ तीर्थंकर पार्श्वनाथ की है, इससे जुड़ी एक अन्य प्रतिमा तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की है। दोनों मूर्तियाँ खड्गासन मुद्रा में हैं। इसके अलावा, इस पहाड़ी पर ३ जैन मूर्तियाँ और शिलालेख हिंदू मंदिर में स्थित हैं, जिसका नाम 'पंडी अंदवर मंदिर' है। हाल ही में, २० जनवरी २०१३ को काशी विश्वनाथ मंदिर के पीछे तालाब में दो युवा पुरातत्त्वविदों द्वारा दो नए तमिल ब्राह्मी शिलालेख खोजे गए थे। श्री एम. प्रसन्ना और श्री आर. रमेश, प्रत्येक शिलालेख ४ अक्षर/४ शब्दों वाला था। पंक्तियों को 'म्यू-ना-का-रा' (Muu-na-ka-ra और 'मुउ-का-का-ती' (Muu-ca-ka-ti) के रूप में पढ़ा जाता है। डॉ. वी. वेदाचलम, तमिलनाडु पुरातत्त्व विभाग के सेवानिवृत्त वरिष्ठ पुरालेखविद ने कहा कि पहली पंक्ति एक बुजुर्ग जैन साधु के लिए है और दूसरी पंक्ति का अर्थ 'मोचा/मोक्ष गढ़ी/गति' हो सकता है। तो लिपि एक जैन साधु के लिए खड़ी हो सकती है, जो उत्तर की ओर मुँह करके वहाँ आमरण अनशन पर चला गया। अर्थात् उन्होंने सल्लेखन द्वारा निर्वाण प्राप्त किया था। यह पहली बार है कि तमिल-ब्राह्मी लिपि, एक जैन साधु का जिक्र करते हुए, जिसने आमरण अनशन किया था, तमिलनाडु में खोजा गया था। अन्य सभी तमिल-ब्राह्मी शिलालेख उन दानदाताओं का उल्लेख करते हैं जो जैन साधुओं के लिए चट्टानों पर बिस्तर काटते हैं या उनके लिए रॉक-आश्रय बनाते हैं। इस शिलालेख के लिए एक सटीक तारीख निर्दिष्ट करना मुश्किल है, लेकिन यह पहली शताब्दी ईसा पूर्व से पहले का हो सकता है।

-पूर्व वरिष्ठ रक्षा अधिकारी, १६, विजय भवन, कीर्तिस्तंभ चौक, नमक मंडी, सागर (म.प्र.) मोबाइल : 09926437063